पढ़ो-बढ़ो

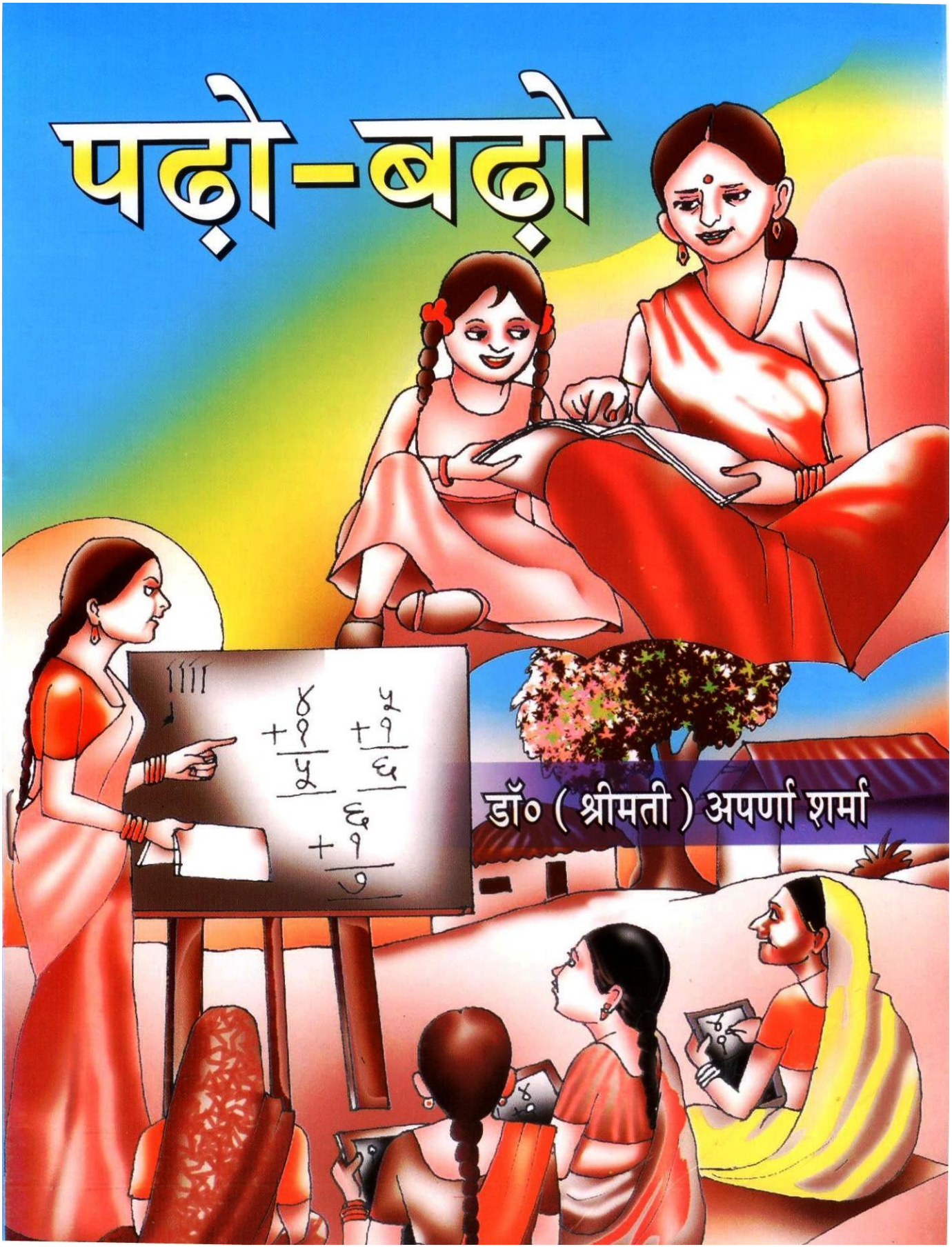

डॉ० (श्रीमती) अपर्णा शर्मा

पढ़ो-बढ़ो

डॉ० (श्रीमती) अपर्णा शर्मा

साहित्य संगम

इलाहाबाद

I.S.B.N. 978-81-8097-167-9

© लेखक

प्रकाशक | साहित्य संगम,
नया 100, लूकरगंज, इलाहाबाद

संस्करण | प्रथम, 2012

मुद्रक | एकेडेमी प्रेस, इलाहाबाद

मूल्य | तीस रुपये मात्र

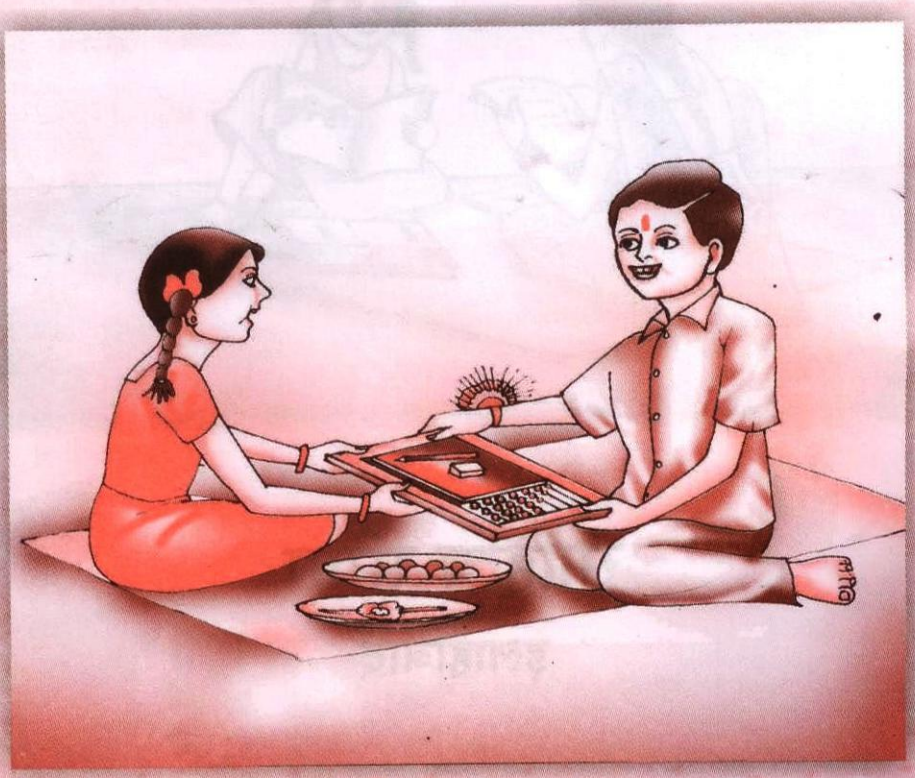

दो शब्द

धन का अभाव, स्कूल की दूरी, सामाजिक पारिवारिक या निजी कारणों से बड़ी संख्या में लोग अनपढ़ रह जाते हैं। आज सरकारी और सामाजिक संगठनों के प्रयास से इनके साक्षर होने और उससे आगे पढ़ने का क्रम शुरू हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक शिक्षा से वंचित रह गये वर्गों को पुनः शिक्षा की ओर प्रेरित करती कविताओं का संग्रह है। कविताओं के विषय आम जन–जीवन से जुड़े हैं। सरल सहज भाषा व दैनिक घटनाओं पर आधारित ये कविताएँ जीवन में शिक्षा के महत्त्व व उसे पाने के उपायों को इंगित करती हैं। पढ़ने की हिम्मत जुटाने वाले नवसाक्षरों को शुभकामनाओं के साथ,

– अपर्णा शर्मा

सूची

1-	पढ़ना सीखा	5
2-	बात निराली	6
3-	पढ़ना पढ़ाना	7
4-	दीदी सुमन	8
5-	शहर घूमने आई माई	9
6-	काकी	10
7-	सौ झंझट	11
8-	दीपा	12
9-	मेला	13
10-	झमेला	14
11-	राखी	15
12-	गाँव चौधरी	16
13-	सब लिख डालें	17
14-	दादी जी ने जोड़ लगाया	18
15-	ताऊ ताई	19
16-	सपने पूरे	20
17-	मुन्नी बस्ता लेकर आई	21
18-	पढ़ाई	22
19-	उम्र बताओ	23
20-	बनी सहायक	24

पढ़ना सीखा

जब से हमने पढ़ना सीखा,
हिम्मत से है बढ़ना सीखा।
गलत राह से हटना सीखा,
सच्चाई से जीना सीखा।
सीख रहे मुश्किल से लड़ना,
सीख रहे मंजिल पर चढ़ना।
सीखेगें हम हर दिन पढ़ना,
सीख जाएगें दुःख को हरना।

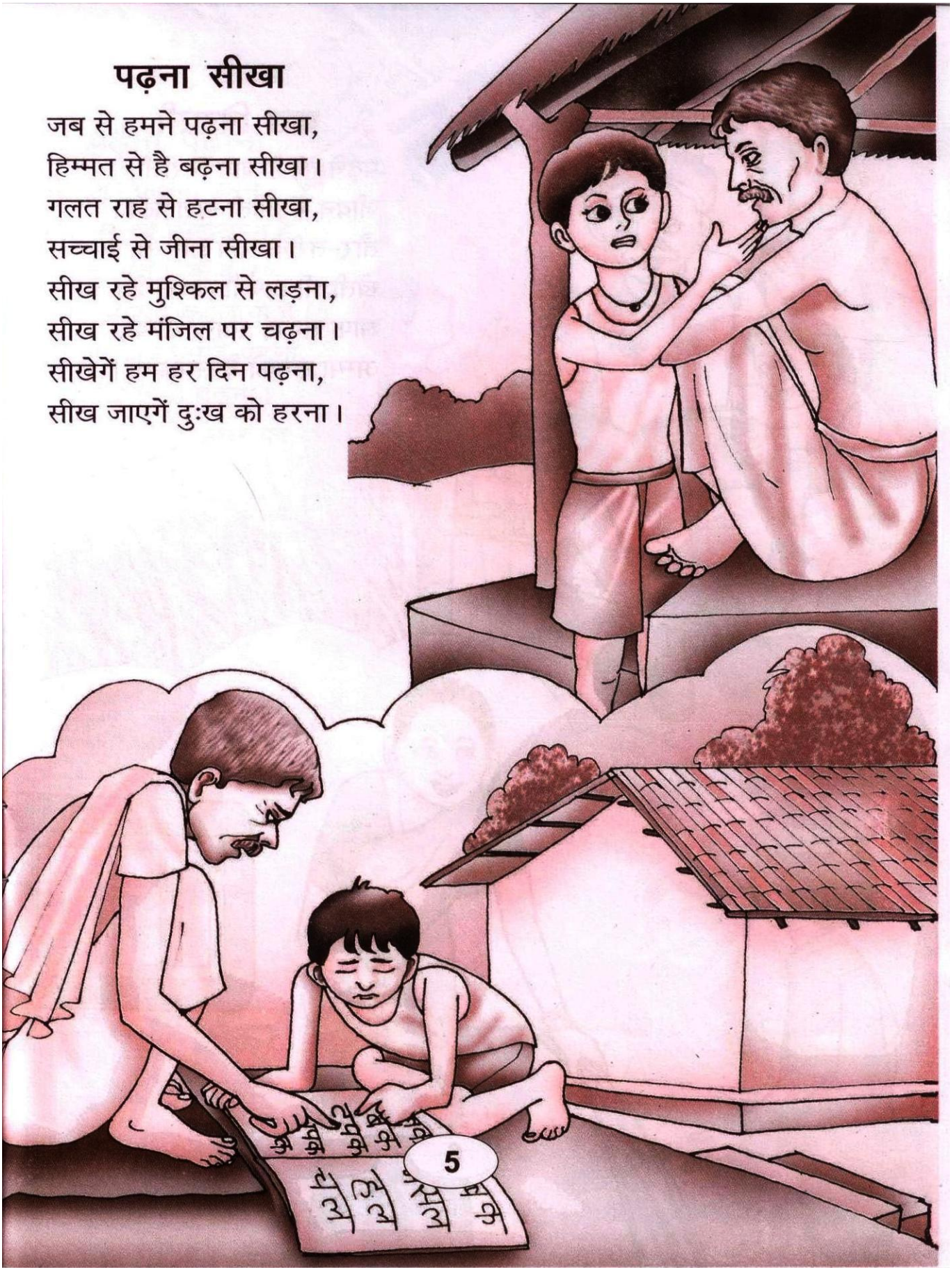

बात निराली

पढ़ने की है बात निराली,
जीवन में आती खुशहाली।
तौर-तरीके सही ज्ञान से,
खेती भी अपनी लहलाती।
साफ सफाई रखना सीखो,
अम्मा सबको है समझाती।

पढ़ना पढ़ाना

पढ़ना और पढ़ाना हमने,
दुनियाँ भर को सिखलाया है।
बस थोड़ी गलती के कारण,
खुद को अनपढ़ कहलाया है।
समझ गए अब हमें है पढ़ना,
दुनियाँ में आगे है बढ़ना।
सबको ज्ञान मिले अक्षर का,
अभियान चला नव साक्षर का।
सीख बहुत जल्दी हम लेगें,
बाँट ज्ञान सबको तब देंगें।

दीदी सुमन

बिटिया पढ़ती, अम्मा पढ़ती,
पढ़ती दादी-नानी भी अब।
अनपढ़ रहे भला कोई क्यों,
चली लहर पढ़ने की है जब।
दीदी सुमन गाँव में आई,
पुस्तक कॉपी बस्ता लाई।
पास बुला हमको वह लेगी,
पढ़ना सिखा सभी को देगी।

शहर घूमने आई माई

शहर घूमने आई माई,
आता नहीं उसे था पढ़ना।
हुई मुसीबत एक दिन ऐसी,
पड़ा अकेले रस्ता चलना।
संध्या का छुटपुटा घिरा था,
माई मंदिर से लौटी थी।
ढूँढ़ रही थी घर वे अपना,
घूम रही थीं गली-गली में।
घर का नम्बर पढ़ नही पाती,
नाम कठिन थे याद नहीं थे।
गोलू, मोलू नाम बताती,
घरवालों का बस वे अपने।
आखिर रोना उनको आया,
रोना सुन सब बाहर आये।
माई को पहचान लिया तब,
बच्चे उनको घर ले आये।
बस्ता एक नया मंगवाया,
माई को पढ़ना सिखलाया।

काकी

काकी जब से शाला जाती
बहुओं को रहती समझाती।
जीवन ना केवल घर में है
ज्ञान बहुत दुनियाँ भर में है।
ज्ञान पिटारी पुस्तक सारी
इन्हें सहेजे रखो बेटी।
पढ़ना लिखना सीख लिया तो
कोई नहीं रहेगी चेटी।

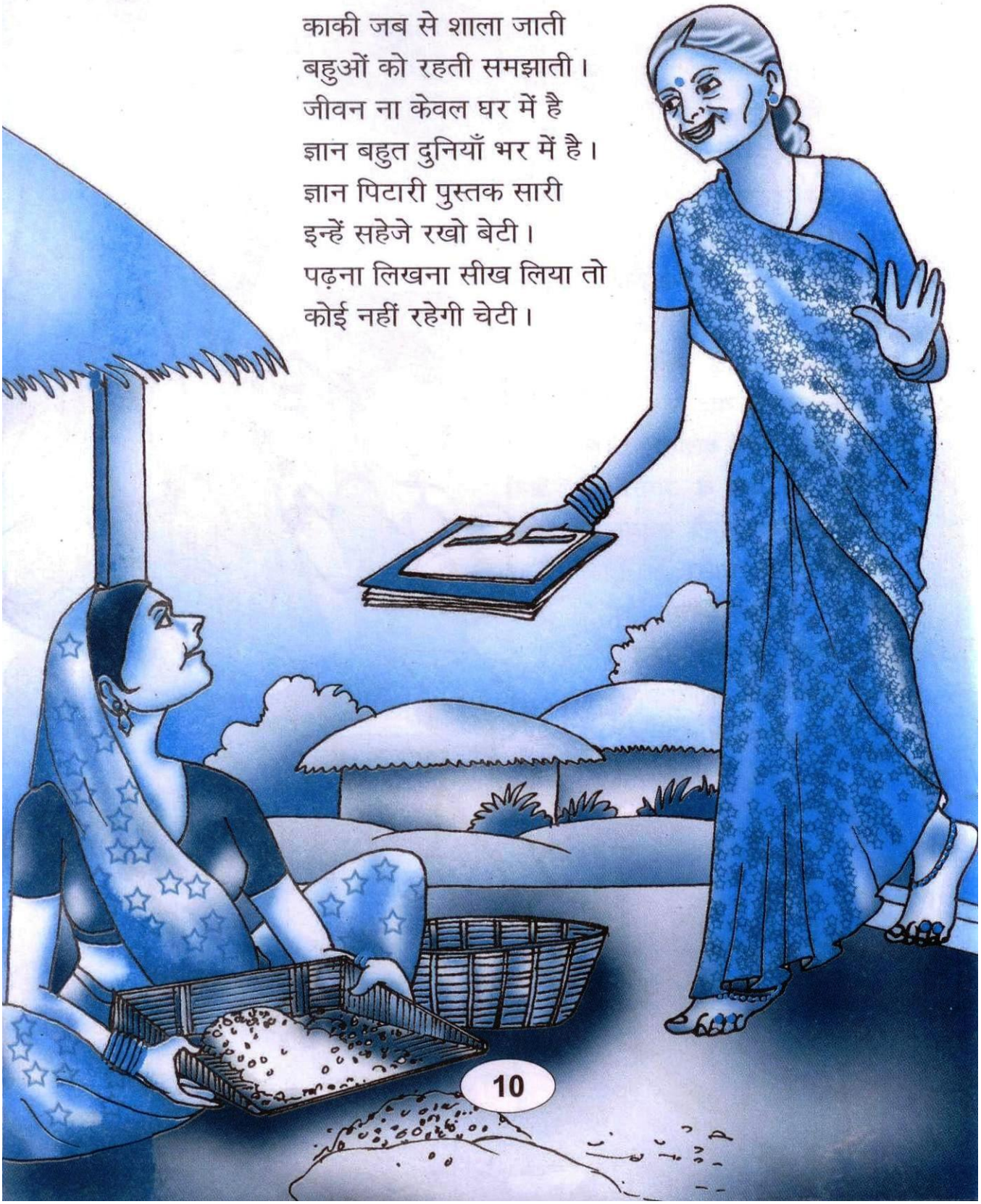

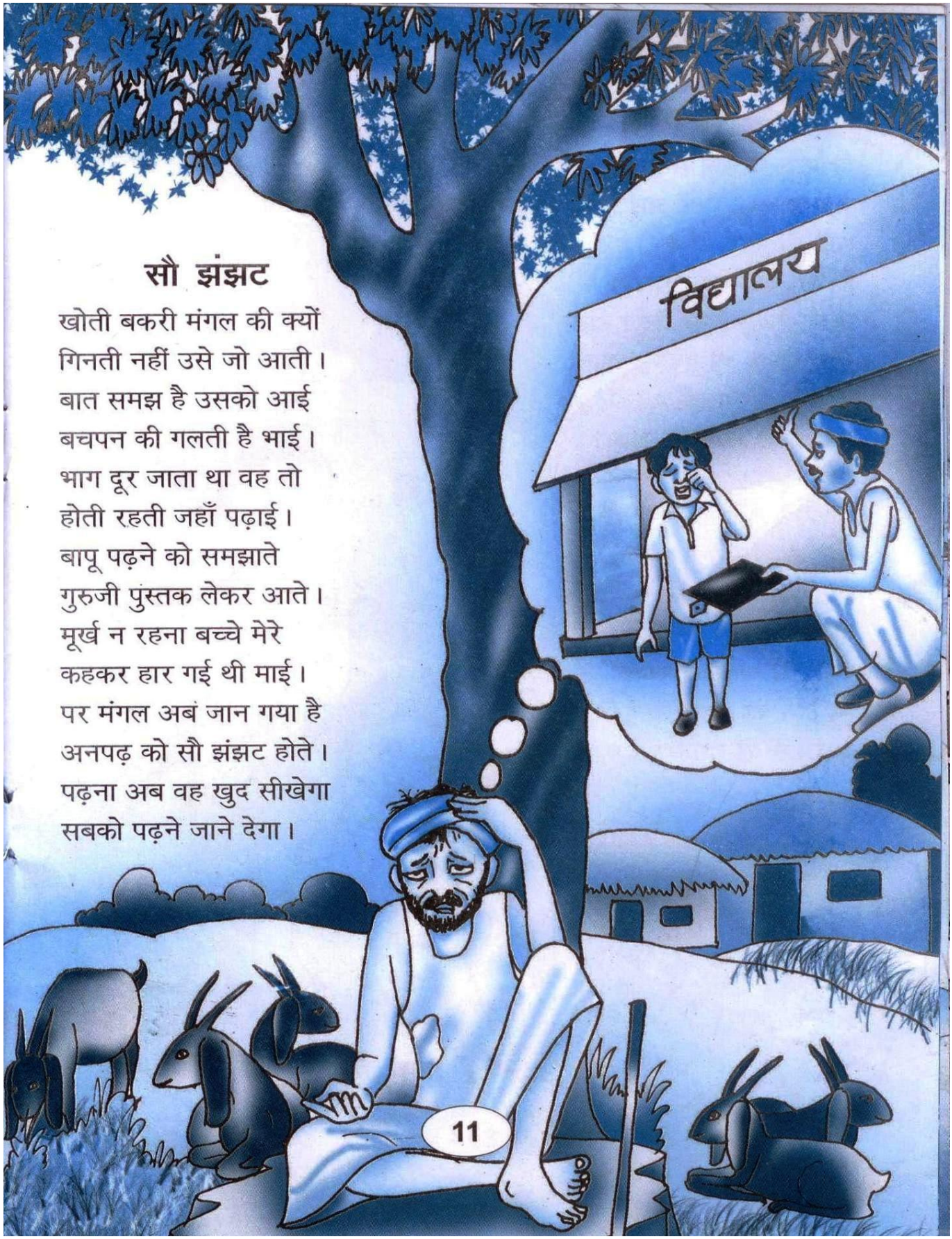

सौ झंझट

खोती बकरी मंगल की क्यों
गिनती नहीं उसे जो आती।
बात समझ है उसको आई
बचपन की गलती है भाई।
भाग दूर जाता था वह तो
होती रहती जहाँ पढ़ाई।
बापू पढ़ने को समझाते
गुरुजी पुस्तक लेकर आते।
मूर्ख न रहना बच्चे मेरे
कहकर हार गई थी माई।
पर मंगल अब जान गया है
अनपढ़ को सौ झंझट होते।
पढ़ना अब वह खुद सीखेगा
सबको पढ़ने जाने देगा।

दीपा

दो बरस के बाद में दीपा,
भाई के घर मिलने आई।
भाई की प्यारी सी बेटी,
लिखने बैठी लेकर पाटी।
उलट-पुलट उसने लिख डाला,
जोड़ गणित भी गड़बड़-झाला।
दीपा ने झट गलती पकड़ी,
सही-सही उसको समझाया।
दीपा से सब पूछ रहे थे,
भौंचक्के से देख रहे थे।
जादू क्या तुमने करवाया,
ज्ञान कहाँ सब इतना पाया?
दीपा ने उनको बतलाया,
पढ़ने की महिमा है न्यारी।
हर दिन वह पढ़ने जाती है,
आई इसी से समझदारी।

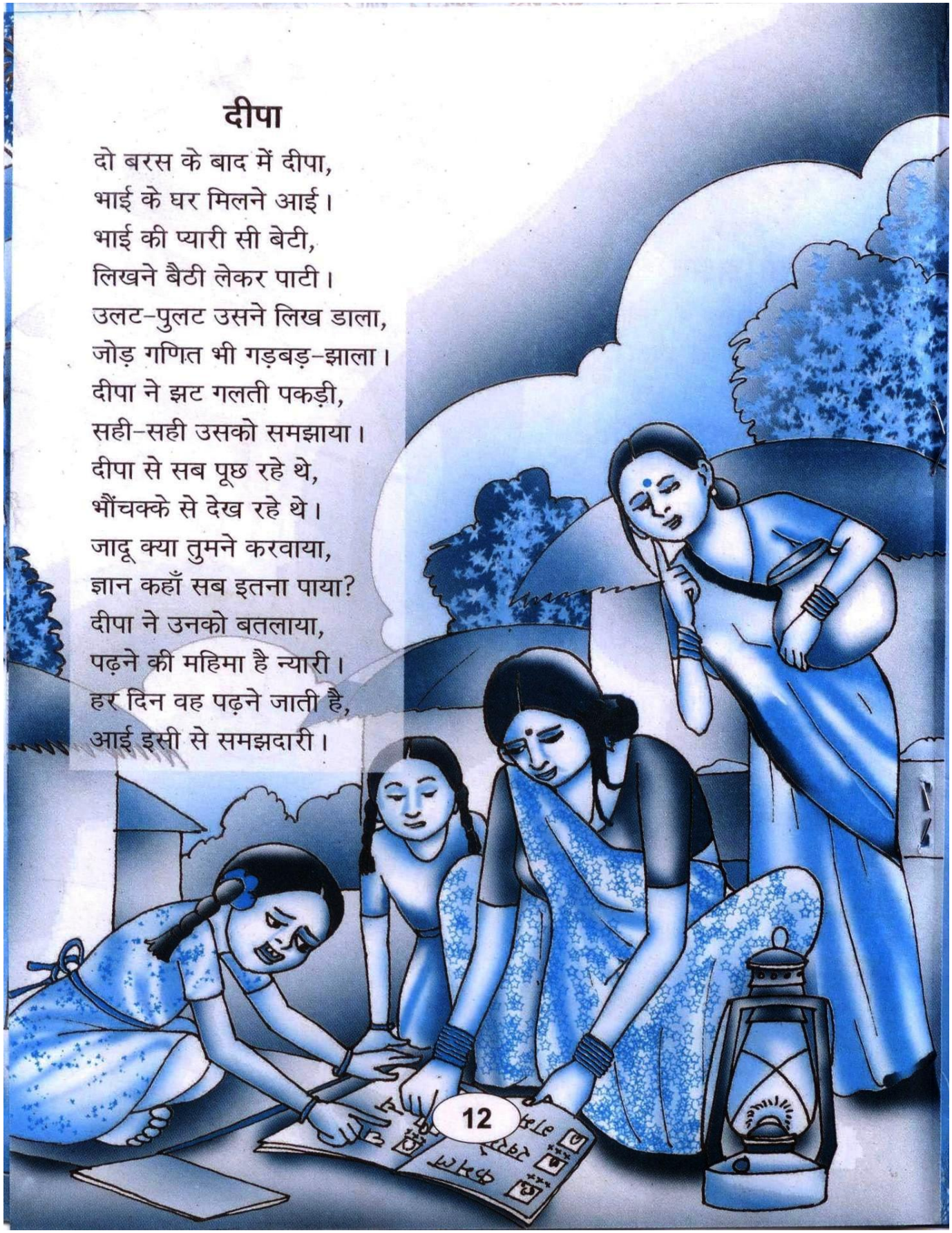

मेला

गाँव पास के ही कस्बे में,
मेला एक दिन लगा हुआ था।
अम्मा मेला देख रही थी,
बर्तन कपड़ा, चूड़ी, पायल।
सामान ले लिया अम्मा ने,
बिल दे दिया दुकानदार ने।
अम्मा ने वह जांचा परखा,
उनका तो माथा चकराया।
सही-सही समझाया उसको,
पैसा ठीक बताया उसको।
मानी गलती उसने अपनी,
जोड़ हिसाब ठीक करवाया।
खूब ठगा था उसने जिनको,
पढ़ लिख सकती थीं अब वे तो।

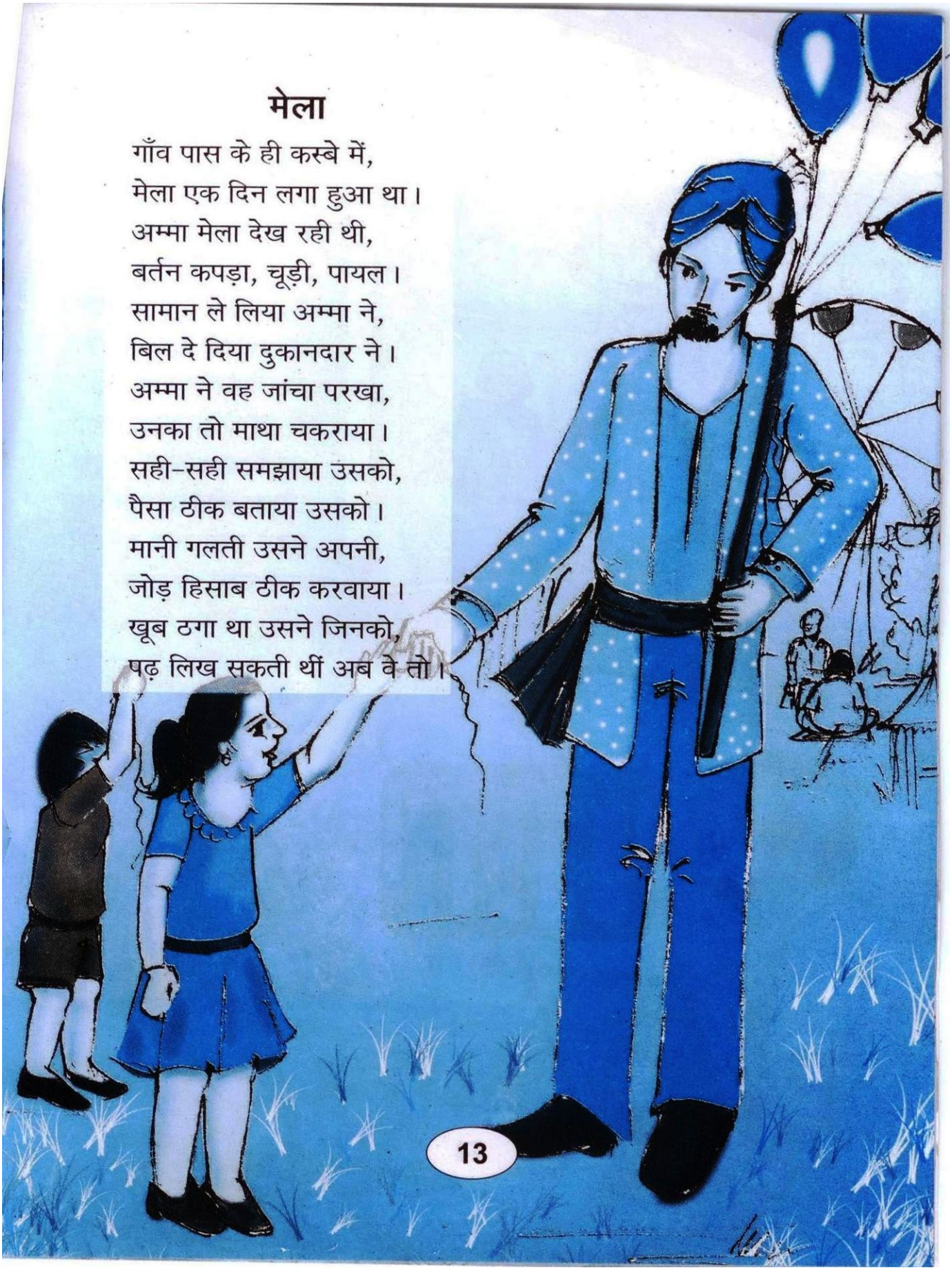

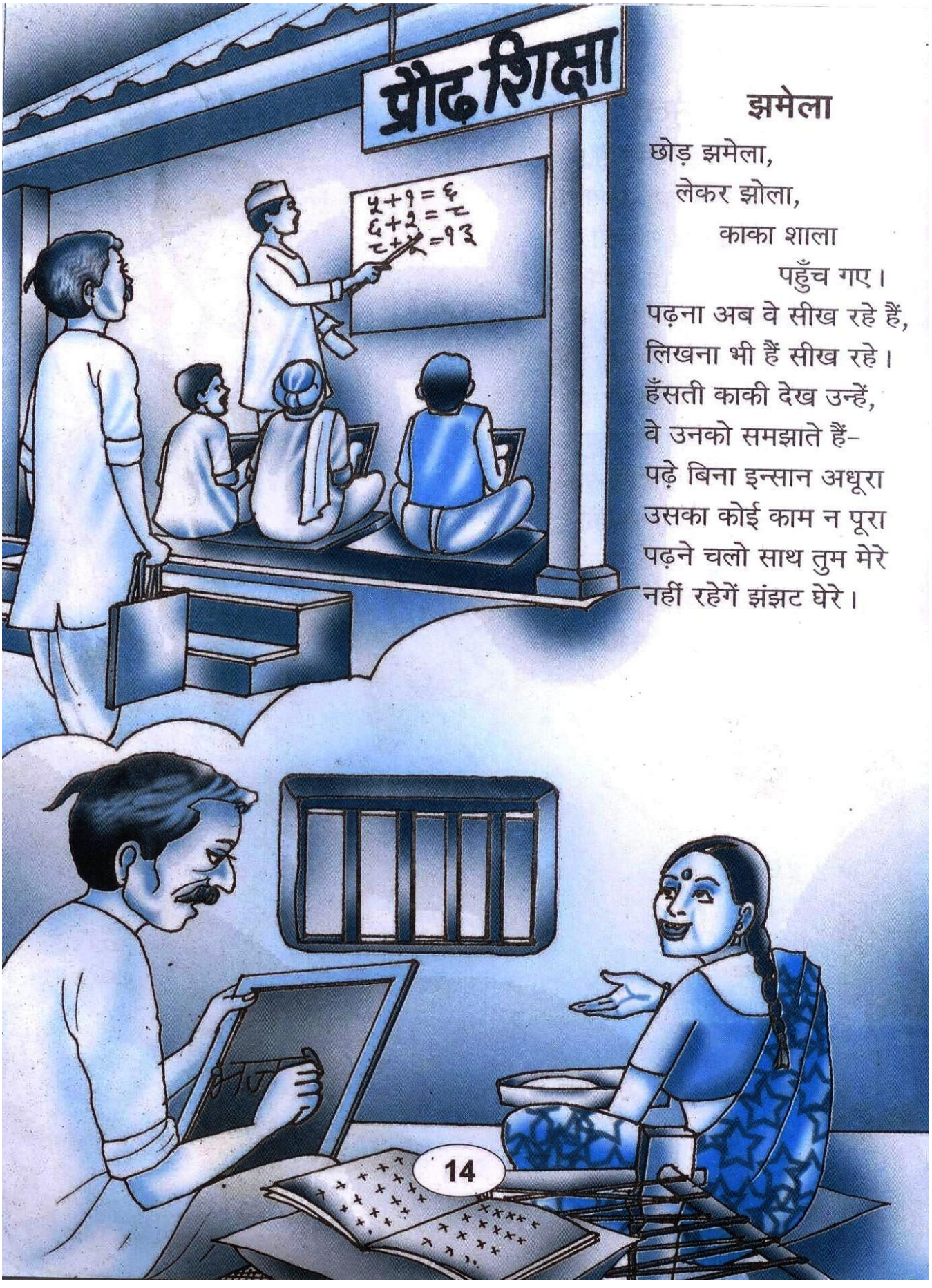

झमेला

छोड़ झमेला,
लेकर झोला,
काका शाला
पहुँच गए।
पढ़ना अब वे सीख रहे हैं,
लिखना भी हैं सीख रहे।
हँसती काकी देख उन्हें,
वे उनको समझाते हैं–
पढ़े बिना इन्सान अधूरा
उसका कोई काम न पूरा
पढ़ने चलो साथ तुम मेरे
नहीं रहेगें झंझट घेरे।

राखी

पर्व मनाया राखी का जब,
मचल गई थी जय की बहना।
राखी के बदले में भैया,
मैं ना लूंगी कपड़ा साड़ी।
ना माला ना चूड़ी गहना,
ना ही चाहिए ढेर मिठाई।
भैया मुझको लाकर देना,
पेंसिल कॉपी और किताबें।
पढ़ने मुझको जाना है अब,
कुछ करके दिखलाना है अब।

गाँव चौधरी

पगड़ी मोटी मूँछे ऐंठी,
जूती नोंकदार पहने।
लाठी सर से ऊँची है,
गाँव चौधरी के अपने।
सबको हरदम अक्ल बताते,
खुद पढ़ने से घबराते।
बेटों को जब पास बिठाते,
धीरे से यह समझाते–
"देखो बदल गया है जमाना,
हुआ जरूरी पढ़ने जाना।
बाकी काम बाद में करना,
पहले नाम लिखाओ अपना।"

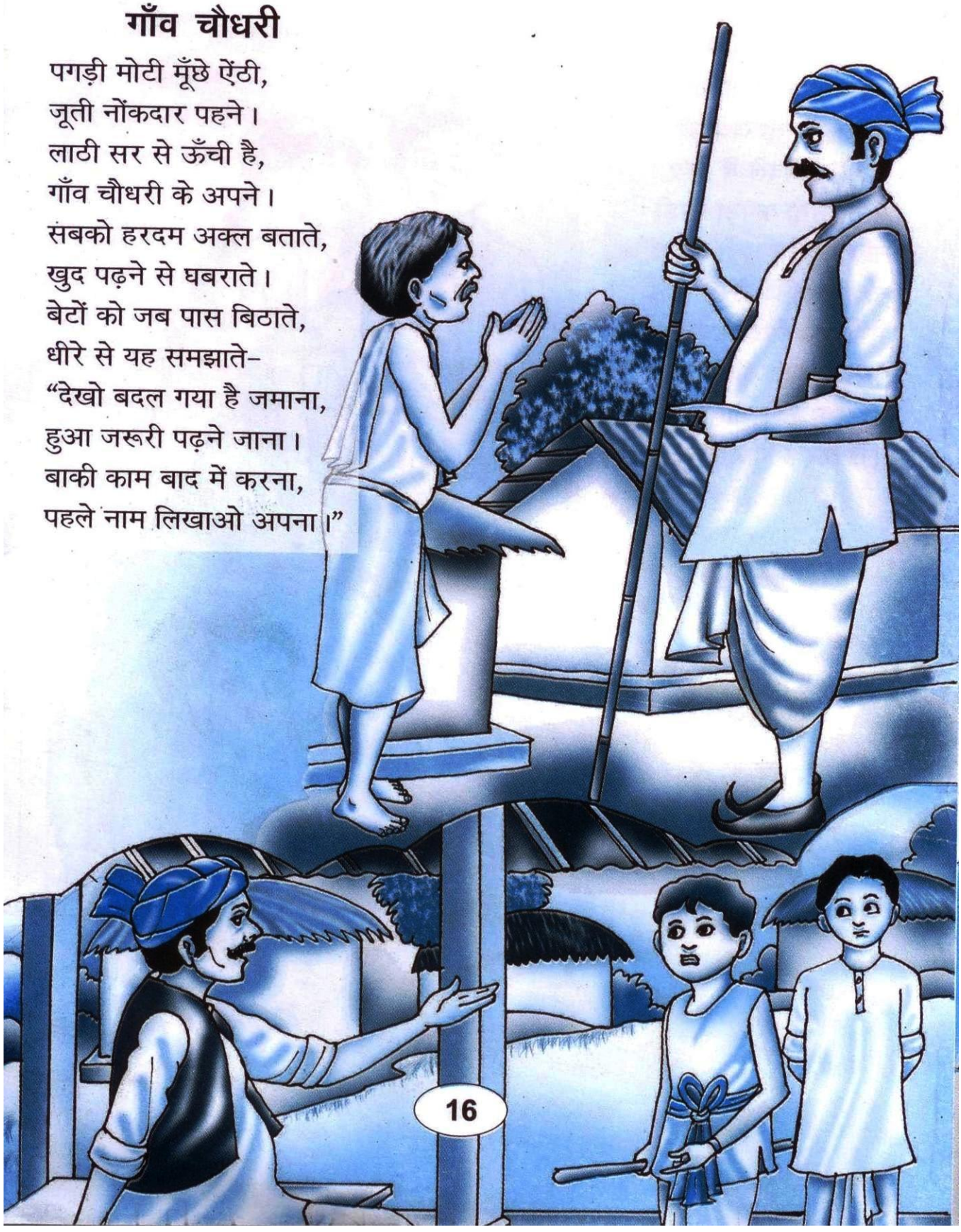

सब लिख डालें

मन में बातें ढेरों आती,
मुँह से सारी कही न जाती।
बातें कितनी है दिमाग में,
वे दिल में घुट कर रह जाती।
औरों तक वे कैसे पहुँचे,
बात नहीं समझ में आती।
सीख जाएं यदि हम सब पढ़ना,
पड़े ना बेढ़ब अक्षर गढ़ना।
कलम उठाये सब लिख डालें,
बड़ी-बड़ी मुश्किल सुलझा लें।

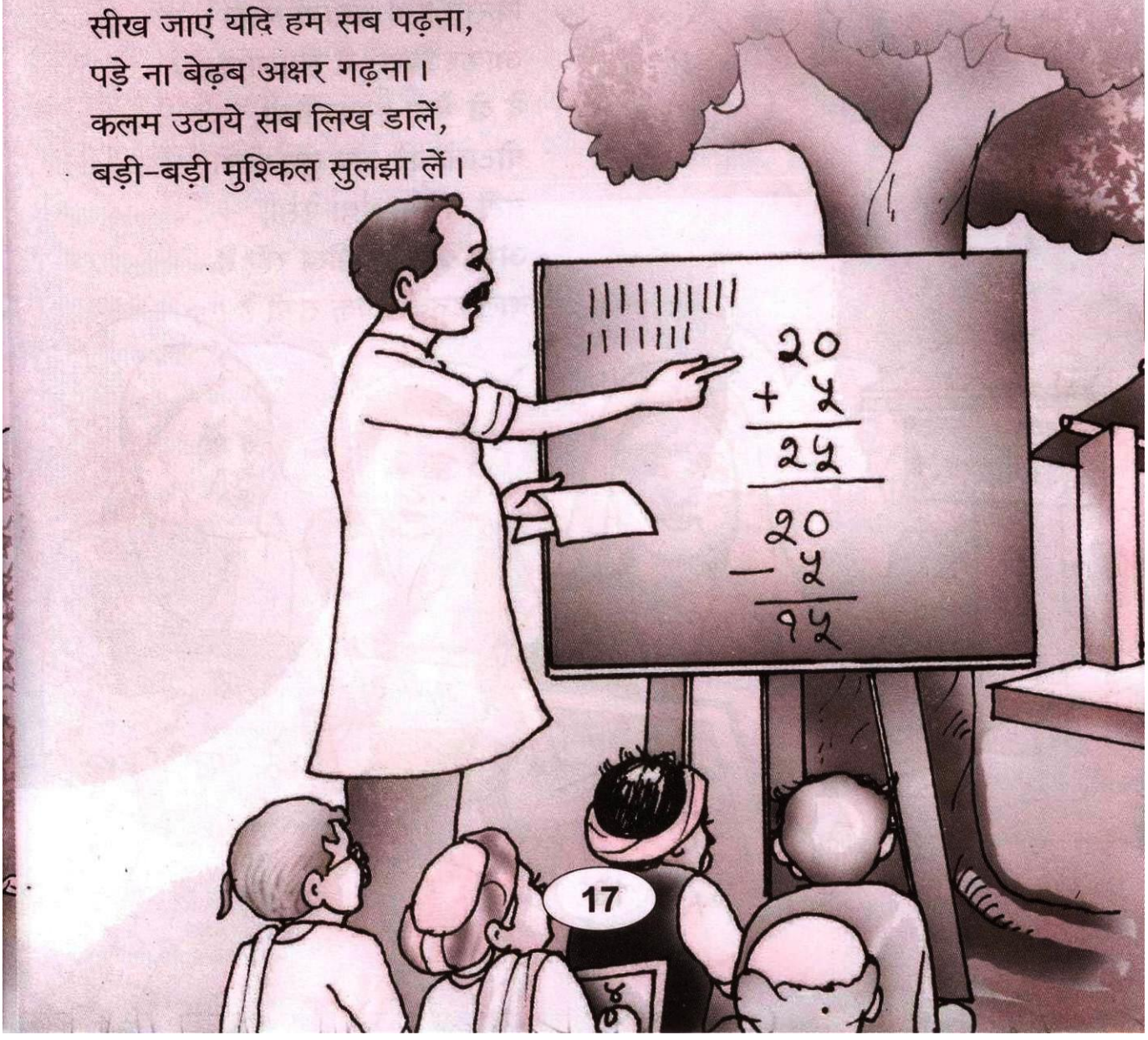

दादी जी ने जोड़ लगाया

दादीजी ने जोड़ लगाया
दुकनदार का सिर चकराया।
कल तक रहा मूर्ख बनाता
गलत जोड़कर था बहकाता।
सही हिसाब बूझ रही हैं
माँजी आज जूझ रही हैं।
हालत उसकी हो गई खस्ता
किसने इन्हें थमाया बस्ता।
आकर बिट्टू ने समझाया–
दे दो भैया इनका पैसा,
घोटालों को अब तुम छोड़ो,
नहीं चलेगा धंधा ऐसा,
अभी और ये सीख रही हैं,
बातें इनकी ठीक सभी है।

ताऊ-ताई

दीदी-भैया, ताऊ-ताई,
मिलकर करते खूब पढ़ाई।
हम पढ़ेगें आगे बढ़ेगें,
बात समझ है उनको आई।
दादाजी ने करी बड़ाई,
दादी देख देख चकराई।
मोनू, सोनू, राजू, संजू,
बन गए उनके संगी भाई।
खेल कूद में भाग दौड़ में,
बच्चे आगे बढ़ जाते हैं।
बारी जब पढ़ने की आई,
आगे निकले ताऊ-ताई।

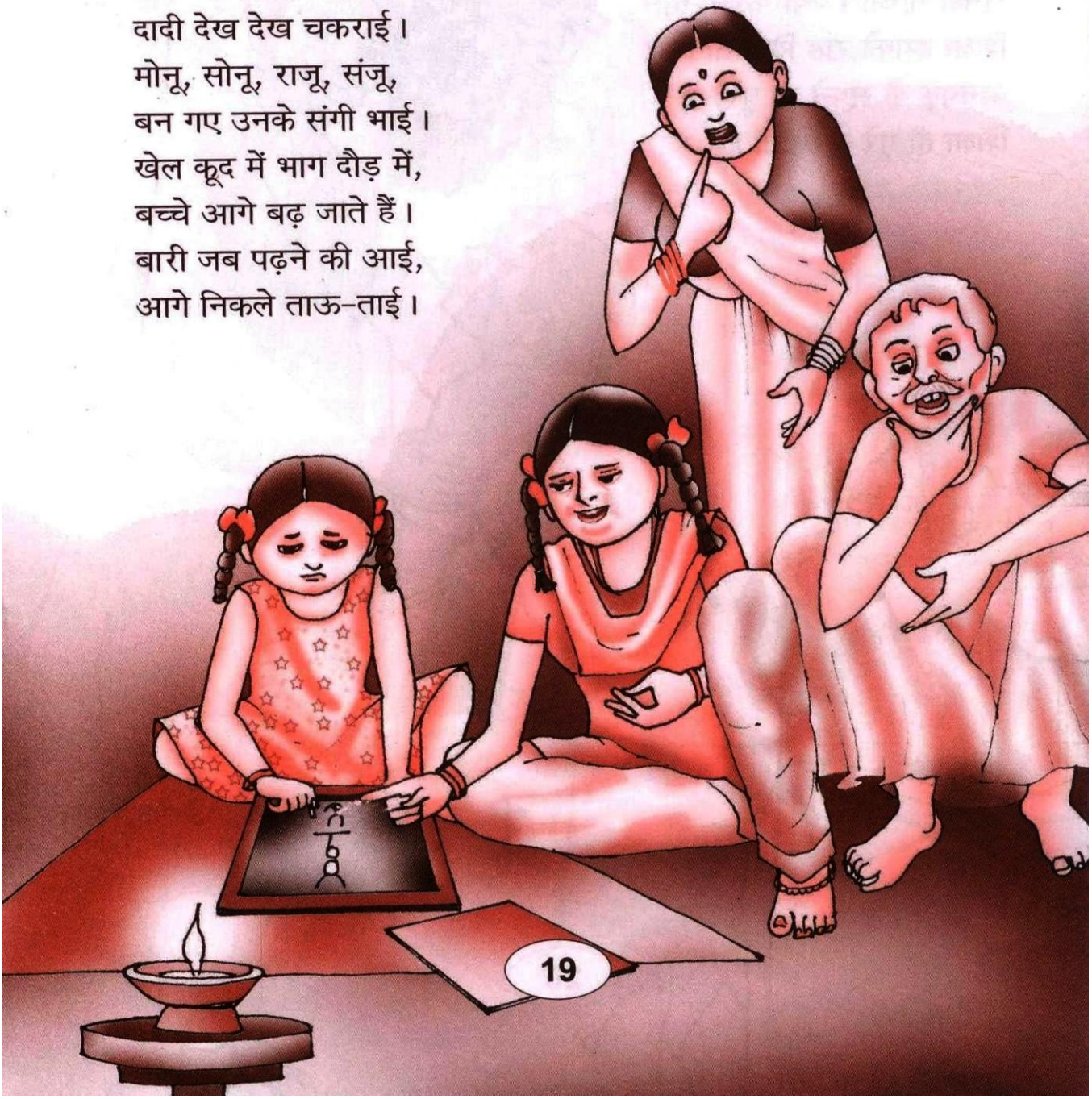

सपने पूरे

झंझट मुश्किल जब भी घेरे,
शिक्षा उनसे पार लगाती।
घोर निराशा अंधकार हो,
शिक्षा कर देती उजियाली।
समझ न आये क्या करना है,
शिक्षा हमको राह दिखाती।
अनपढ़ के सपने ना पूरे,
शिक्षा ही पूरे करवाती।

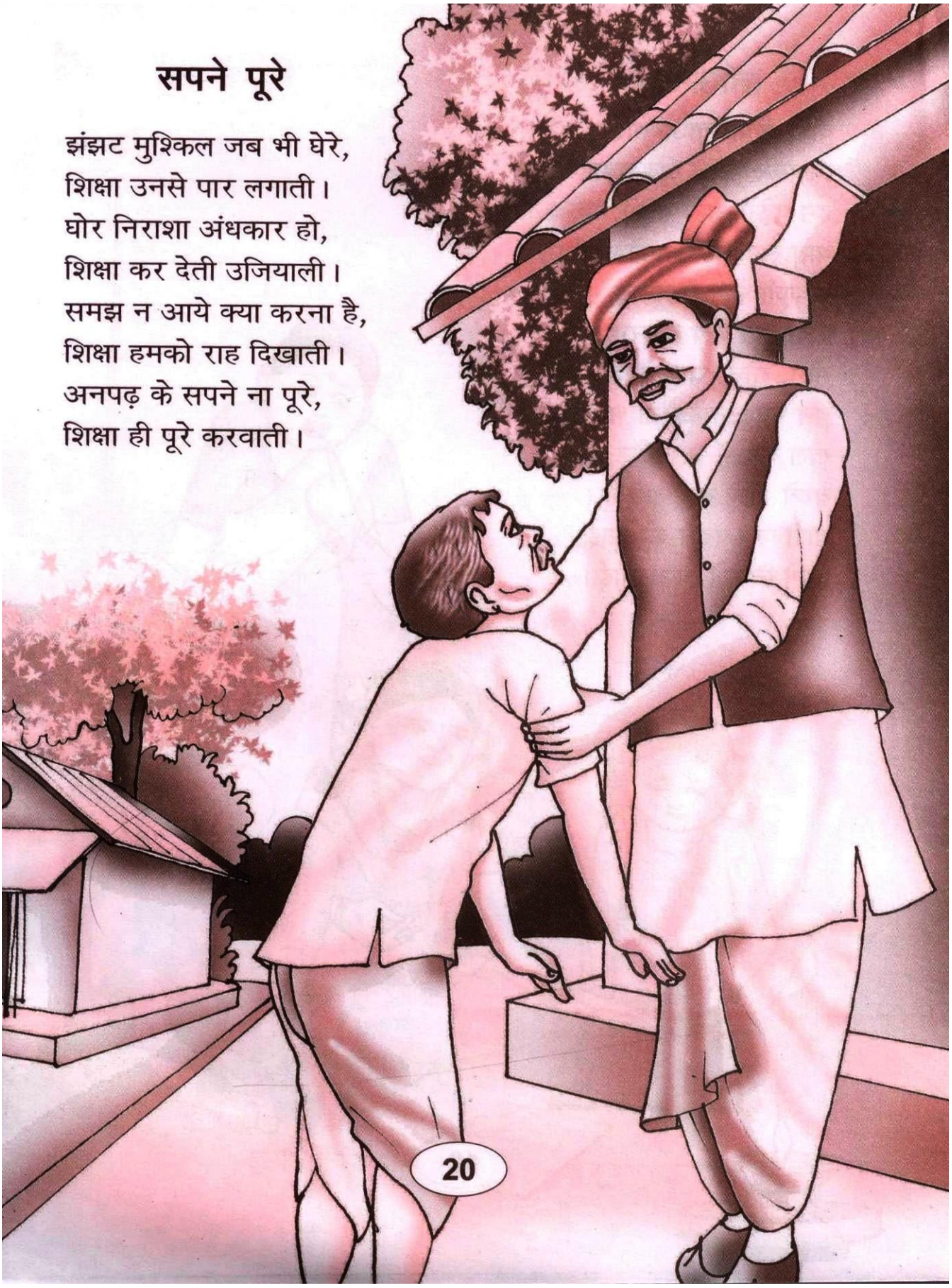

मुन्नी बस्ता लेकर आई

मुन्नी बस्ता लेकर आई,
रंग बिरंगी पुस्तक लाई।
दादी की तबियत ललचाई,
शुरू हुई उनकी भी पढ़ाई।
साग-पात या दाल भात से,
आगे बढ़कर थोड़ा पढ़कर।
लिखना सीख रही हैं अब वे,
दादा-दादी, छोटू भाई।
कोयल, कौआ, मोर, कबूतर,
चिड़िया, तीतर, मिट्ठू भाई।
मुन्नी जैसी करें लिखाई,
मुन्नी जैसी करें पढ़ाई।

पढ़ाई

बूढ़ी माई करे पढ़ाई
कुड़-कुड़, कुड़-कुड़
ओढ़ रजाई।
बच्चों ने जब हँसी उड़ाई
माई उनपर थी गुर्राई-
हटो मूर्खो निपट अनाड़ी।
तुम जवान हो मैं हूँ बूढ़ी।
आँख कान कमजोर हुए हैं
पर मेरा दिल कहता मुझसे
बचपन में जो छूट गया है
उसको हासिल कर लेना है।
लिखना सीखूँ पढ़ना सीखूँ
जोड़ गणित भी जान सकूं मैं
पुस्तक में जो ज्ञान दिया है
उसको अर्जित कर लेना है।
पक्का यही इरादा मेरा
अनपढ़ आज नहीं रहना है।

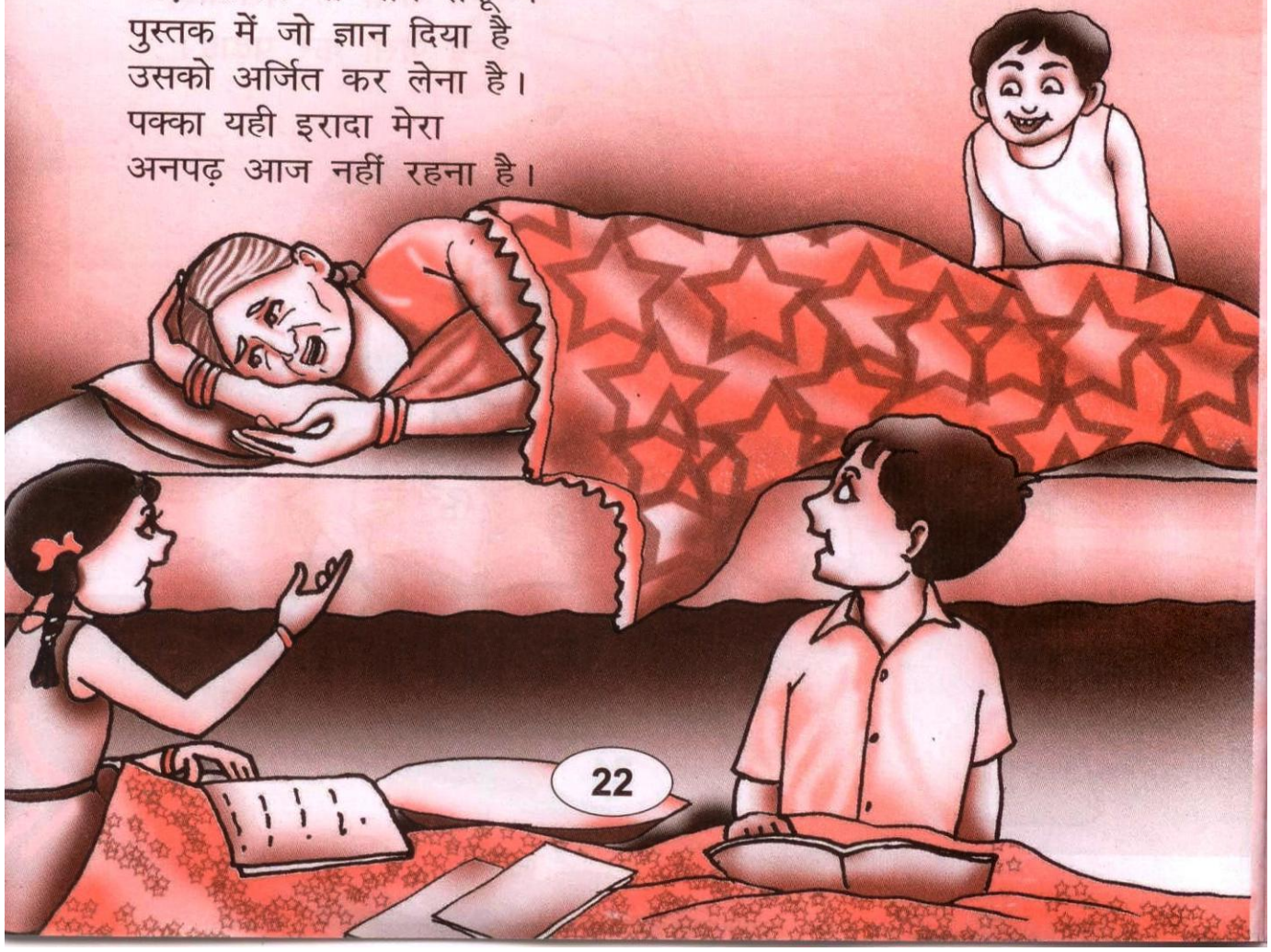

उम्र बताओ

उम्र बताओ दादा अपनी,
बिन्नो अड़ी हुई थी जिद पर।
दादा उसको रहे बताते,
बहुत देर तक थे समझाते।
कभी सितारों को दिखलाते,
पेड़ों जितनी उम्र बताते।
कभी उम्र बेटों की जोड़े,
गिनते साल आजादी के भी।
बिन्नो कहती वर्ष बताओ,
गिनकर पूरे मुझे दिखाओ।
आखिर मान गए दादा जी,
गिनती उनको नहीं है आती।
बिन्नो पल में बड़ी हो गई,
दादा जी बालक बन बैठे।
बिन्नो ने एक पुस्तक ला दी,
दादा को गिनती सिखला दी।

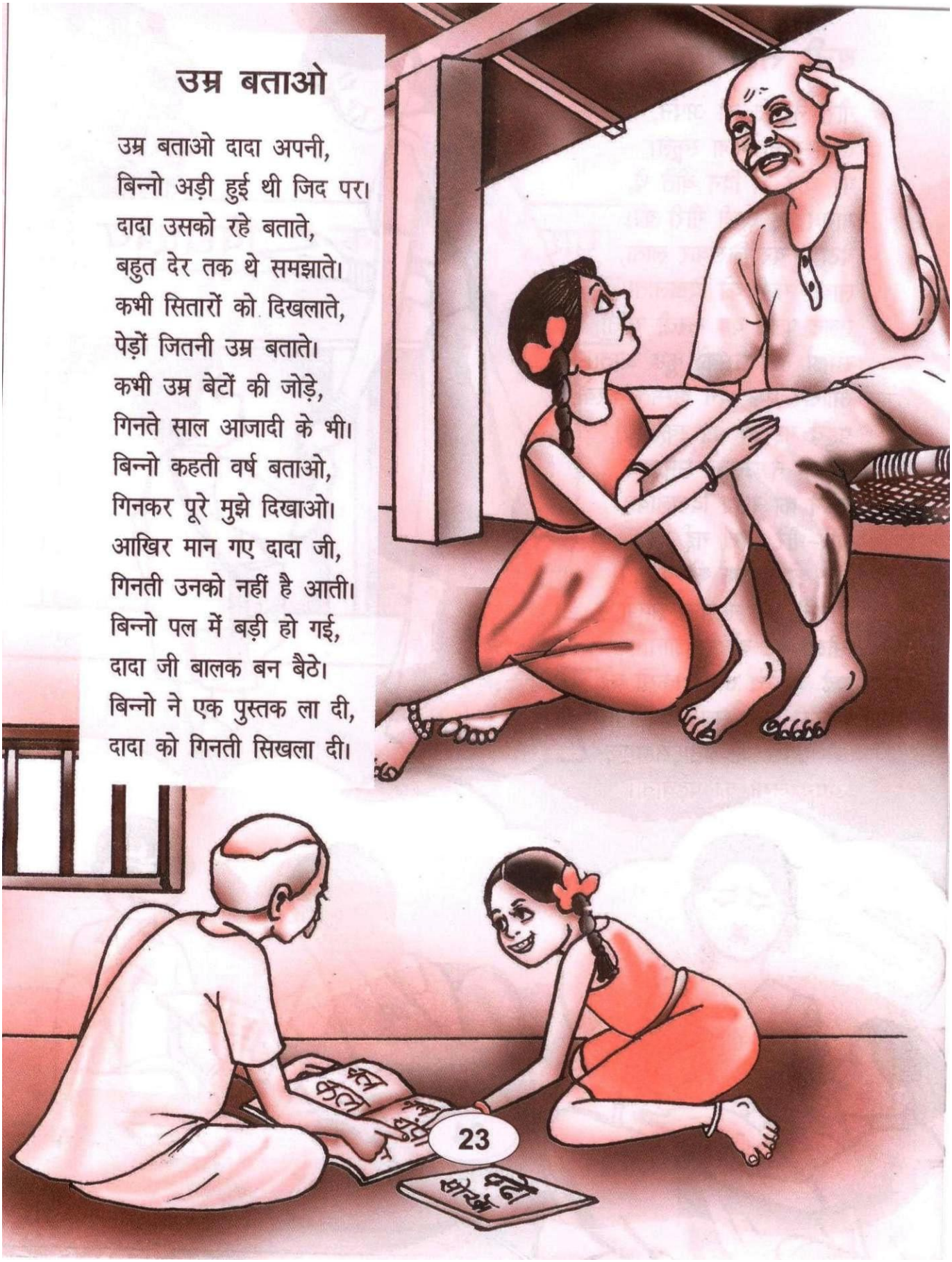

बनी सहायक

गौरी ने बेटे को अपने,
खुशी-खुशी भेजा स्कूल।
पर थोड़े ही दिन बीते थे,
गायब हुई खुशी गौरी की।
बेटा सुन्दर लिखकर लाता,
लाकर गौरी को दिखलाता।
उलट पलट वह करती रहती,
समझ नहीं उसको कुछ आता।
आखिर एक दिन हिम्मत करके,
पहुँच गई वह भी स्कूल।
गुरूजी ने उसको समझाया,
पढ़ने का रस्ता दिखलाया।
धीरे-धीरे सीख गई वह,
बेटे की पुस्तक को पढ़ना।
गिनती जोड़ लगाना सीखी,
सीखी बेटे को समझाना।
पड़े जरूरत अगर किसी कौ,
चिट्ठी पाती सब लिखवाना।
बस्ती भर की बनी सहायक,
अपने जैसों को पढ़वाना।

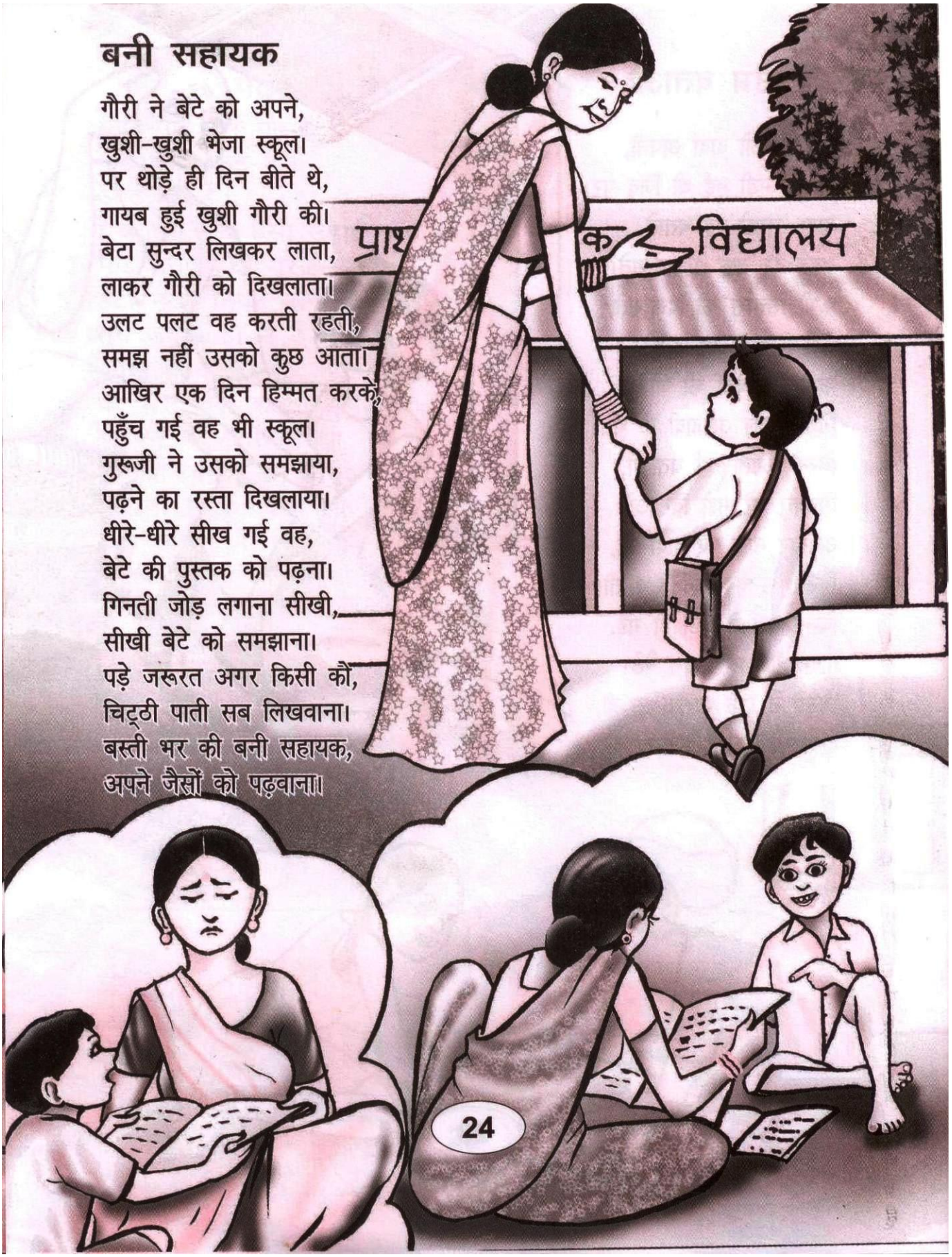

डॉ० (श्रीमती) अपर्णा शर्मा

शिक्षा : एम०ए० (प्राचीन इतिहास व हिन्दी)
बी०एड०
एम०फिल० (इतिहास)
पी-एच०डी० (इतिहास)

प्रकाशित रचनाएँ : **भारतीय संवतों का इतिहास (शोध ग्रंथ)**
(एस०एस० पब्लिशर्स, दिल्ली, 1994)
खो गया गाँव (कहानी संग्रह)
(माउण्ट बुक्स, दिल्ली, 2010)
सरोज ने संभाला घर (नवसाक्षरों के लिये)
(साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2012)
विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख, पुस्तक समीक्षाएँ, कहानियाँ एवं कविताएँ प्रकाशित।
लगभग 100 बाल-कविताएँ भी प्रकाशित।
दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं काव्य-गोष्ठियों में भागीदारी।

सम्पर्क : 'विश्रुत'
5, एम०आई०जी०, गोविन्दपुर,
निकट अपट्रान चौराहा,
इलाहाबाद-211 004 (उ०प्र०)
दूरभाष : +91-8005313626

ISBN 978-81-8097-167-9